नाम - डॉ. प्रदीप कुमार राय
एसो. प्रोफेसर, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम।
विषय - राजनीति-शास्त्र
कक्षा - बी.ए. (प्रतिष्ठा) भाग - 01
पेपर - 01
भाग - 01
दिनांक - 01.06.2020
टॉपिक - मार्क्सवाद तथा इसके प्रमुख सिद्धांत

मार्क्सवाद एक ऐसी विचारधारा है जिसमें सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन को दर्शाते हुये प्रगति और विकास के नियम को दर्शाया गया है। इसमें यह बताया गया है कि इतिहास का विकास आर्थिक शक्तियों के आधार पर हुआ है। इसमें पूंजीवाद का अंत कर वर्गविहीन समाज की स्थापना के लिये विधिवत क्रमिक प्रक्रिया का निरूपण किया गया है। प्रो. सी.ई. एम. जोड के शब्दों में, 'मार्क्स प्रथम समाजवादी लेखक है जिसके कार्य को वैज्ञानिक कहा जा सकता है। उन्होंने अपने वांछित समाज का चित्रण करते हुये उन स्थितियों का वर्णन किया है जिनके माध्यम से इस लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।'

मार्क्सवाद के प्रमुख सिद्धांत -

(1) द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद (Dialectical Materialism) - मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद में उस प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया है जिसके अनुसार सृष्टि के विकास और उसके मूल तत्त्व की सूचना मिलती है।

मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद

Teacher's Signature ....

हीगल से ग्रहण किया गया है जिसके वाद (Thesis) प्रतिवाद (Antithesis) और समवाद (Synthesis) तीन अंग हैं। मार्क्स के अनुसार वाद समाज की एक साधारण स्थिति है जिसमें कोई अंतर्विरोध नहीं पाया जाता। धीरे-धीरे समय वाद वाद से असंतुष्ट होकर उसकी प्रतिक्रिया के रूप में प्रतिवाद उत्पन्न हो जाता है। यह निषेधात्मक स्थिति वाद की अपेक्षा अधिक प्रगतिशील मानी जाती है। प्रतिवाद में अंतर्विरोध के फलस्वरूप प्रतिवाद का भी प्रतिवाद उत्पन्न होता है और प्रतिवादों के संयोग से समवाद (Synthesis) की उत्पत्ति होती है। इसप्रकार वाद, प्रतिवाद और समवाद की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद को गेहूँ के पौधे के उदाहरण से समझाया गया है जिसमें गेहूँ का दाना वाद है अंकुरित होकर पौधा बनना प्रतिवाद है तीसरी अवस्था में गेहूँ के दाने का बनना समवाद है। आर्थिक जीवन के संदर्भ में पूंजीवाद या व्यक्तिगत संपत्ति की व्यवस्था <u>वाद</u> है जिसमें यह असंगति रहती है कि समाज संपत्तिवाली व सर्वहारा वर्ग लोगों के दो वर्गों में बंट जाता है। इसकी असंगति या दोष के कारण समाज में संघर्ष होता है तथा व्यक्तिगत संपत्ति की सामाजिक व्यवस्था के <u>प्रतिवाद</u> स्वरूप समाज के विकास की वह अवस्था आती है जिसे सर्वहारा वर्ग के अधिनायकतंत्र की अवस्था कहा जाता है। इन दोनों अवस्थाओं के <u>समवाद</u> स्वरूप वह अवस्था होती है जिसे साम्यवादी अवस्था कहा जाता है...

Teacher's Signature .... (2/2)